हिंदी विभाग, चिन्मय विद्यालय, बोकारो से प्रकाशित
(त्रैमासिक ई–पत्रिका)

जनवरी–2020, अंक–4

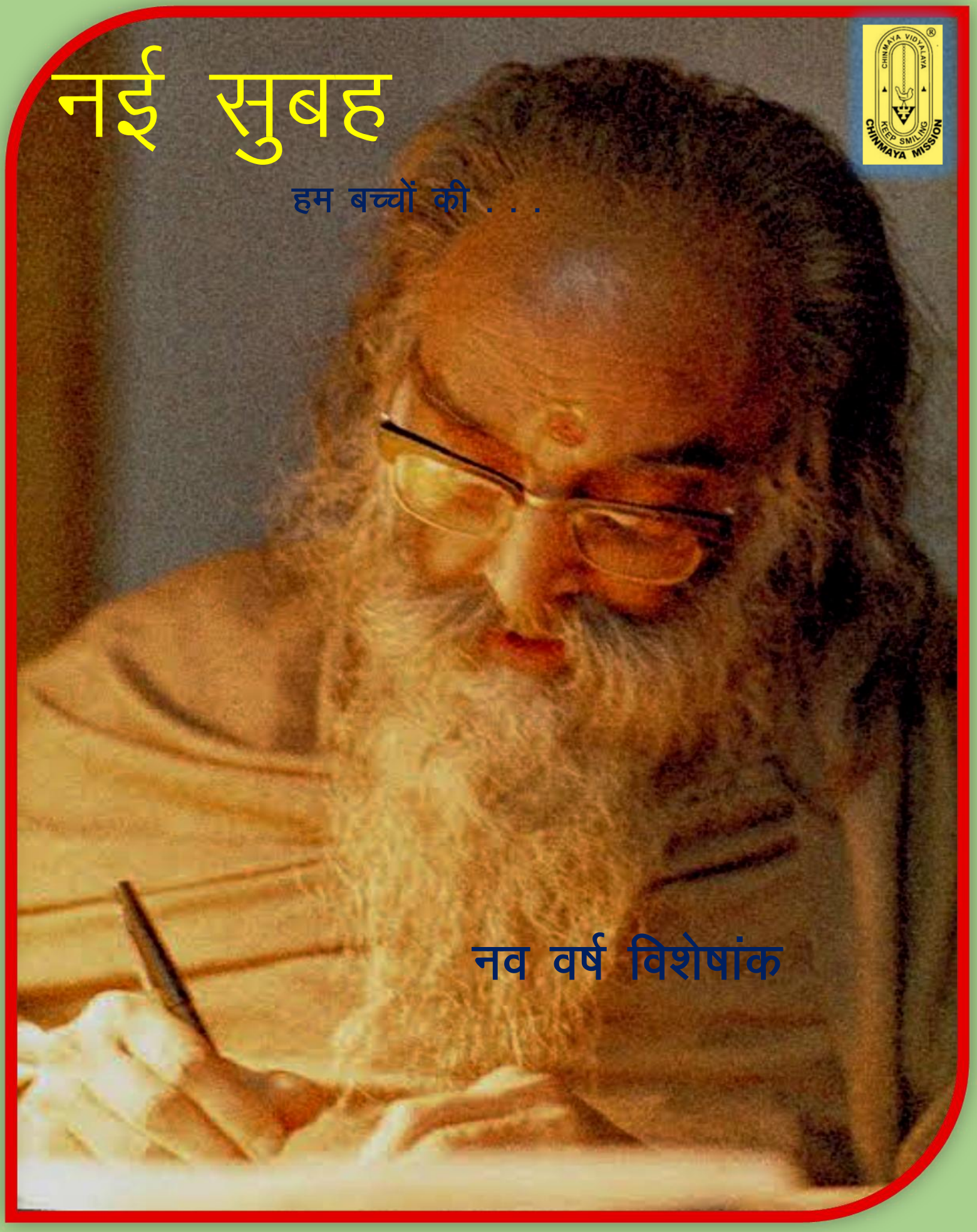

नई सुबह

हम बच्चों की . . .

नव वर्ष विशेषांक

नई सुबह

हम बच्चों की. . . .

(हिंदी विभाग, चिन्मय विद्यालय, बोकारो की त्रैमासिक ई–पत्रिका)

ॐ

चिन्मय विद्यालय, बोकारो

संपादक मंडल

रेणु सिंह
नीलिमा कुमारी
प्रत्युष कुमार
चित्तरंजन

संपादन सहयोग एवं अंक–सज्जा

मंतोष कुमार
अंशु उपाध्याय

संपादकीय विभाग

हिंदी विभाग
चिन्मय विद्यालय, बोकारो
झारखंड – 827006

ई–मेल

cvbokaro.naisubah19@gmail.com

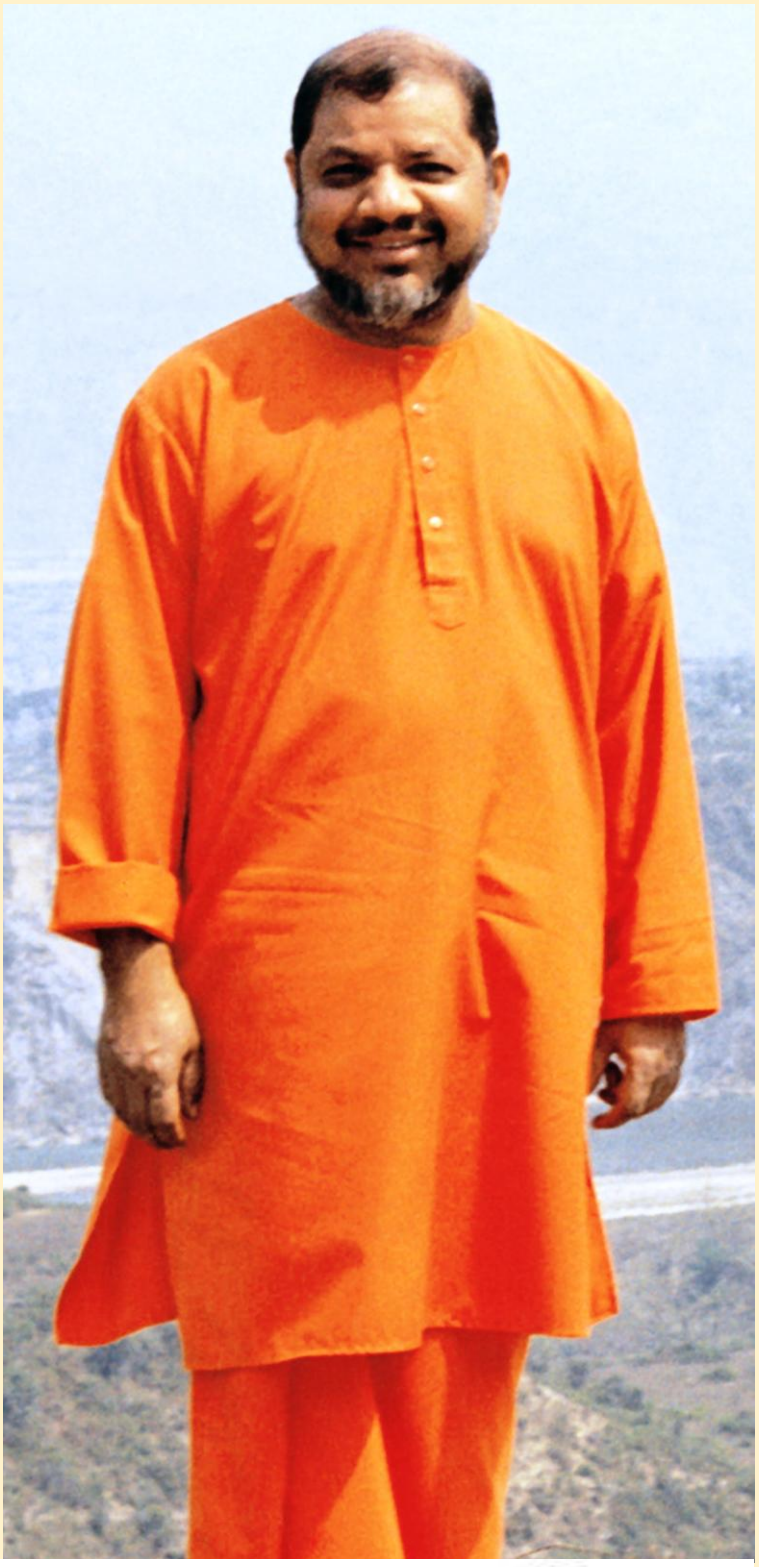

नई सुबह

हम बच्चों की. . . .

(हिंदी विभाग, चिन्मय विद्यालय, बोकारो की त्रैमासिक ई–पत्रिका)

इस अंक में

गुरु ध्यानम् 04

संपादक की कलम से.... 05

परिचय – स्वामी तपोवन महाराज जी 06

प्रेरक प्रसंग–अपनी बुद्धि को तेज करें

–नीलिमा कुमारी 07

नवीन हस्ताक्षर –––

- श्रीराम के सच्चे भक्त — आर्यन अपूर्व — 08
- लालच का फल — देबाजीत महातो — 09
- परिचय महाराणा प्रताप सिंह — 10–11

शब्द निर्झर––– 12

चित्र देखकर कविता लिखो

साक्षात्कार ––– 13–14

श्री नरमेन्द्र कुमार (मुख्य समन्वयक), चिन्मय विद्यालय, बोकारो

विविध –––

- चित्र वीथिका–चित्र परिचय जामिनी रॉय 15
- महान स्वतंत्रता सेनानी–नेताजी सुभाषचंद्र बोस 16–17
- पहेलियाँ 17
- ज्ञान का दीपक – स्वामी विवेकानंद 18–19
- वसंत पंचमी की शुभकामना 20
- मकर संक्राति 21
- गणतंत्र दिवस 22–23
- कथा संसार – अधूरी कहानी 23
- कुछ दिलचस्प बातें 24
- हिंदी प्रश्नोत्तरी 25
- रेत घड़ी भारतेन्दु हरिश्चंद्र 26–27
- ज़रा हट के हंसी के गोलगप्पे 28

नई पौध ––

हिंदी	श्रुति (9सी)	29
शूरवीर फिर आएगा	करण कुमार (8एफ)	30
गर्व है चिन्मय विद्यालय पर	केसर कुमारी	31
अध्यापक	श्रुति (9सी)	31
एक वृक्ष	करण कुमार (8एफ)	32
रुदन	अखलाक (8ए)	32
क्लास मॉनीटर	प्रत्युष कुमार (8सी)	33
हम हैं पंछी उड़ते गगन के	सात्विक उपाध्याय (8एफ)	33
याद आते हैं वे लम्हें	रौनक राज (8ई)	34
मेरी खुशी	तिलोत्तमा कोचगवे	35
प्रेम वर्षा	रॉली प्रियदर्शी	36
उत्तर		37
अगला अंक		38

गुरु ध्यानम्

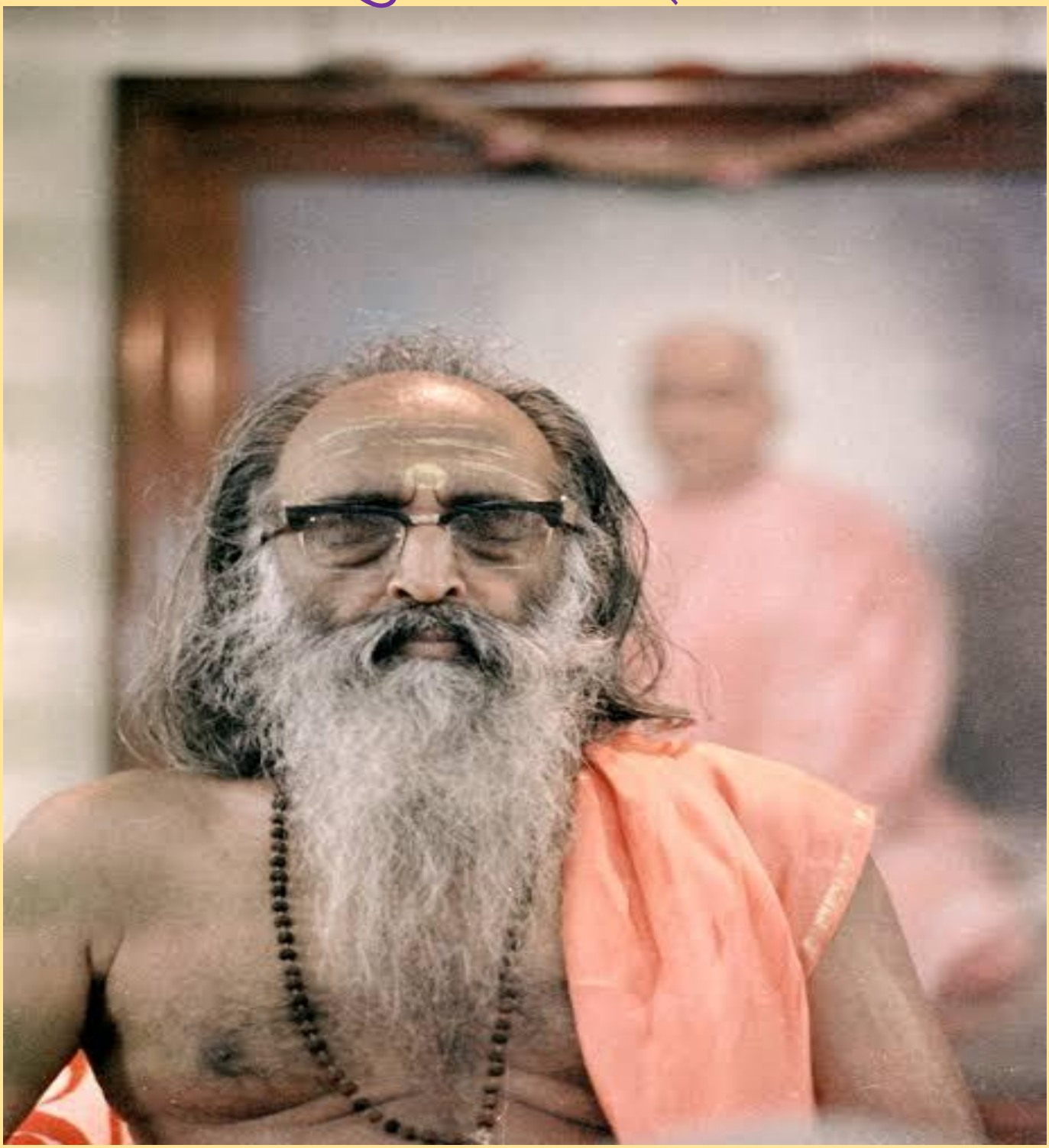

''बच्चे पात्र नहीं हैं जिनमें ज्ञान भरना है ।
वे तो दीपक हैं जिन्हें प्रज्वलित करना है।।''

संपादक की कलम से

जैसा कि हम सभी ज़ानते हैं, नववर्ष उत्साह, उल्लास एवं उमंग का उत्सव है। सद्भावना, अपनत्व एवं सौहार्द्र नववर्ष का सुंदर उपहार है, जिसे हम सभी इस अवसर पर एक–दूसरे को देकर अपनी खुशी प्रकट करते हैं।

इस दिन लोगों में एक नई शक्ति, स्फूर्ति एवं चेतना का विकास होता है। लोग एक–दूसरे को हार्दिक बधाइयाँ एवं शुभकामनाएँ देते हैं। इस तरह हम बीते हुए साल को हँसते–हँसते विदा कर ढेर सारी खुशियों, उमंगों और नई आशाओं के साथ नव वर्ष का स्वागत करते हैं।

इस नव वर्ष पर मुझे हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध एवं मार्तंड कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी की प्रसिद्ध पंक्तियाँ याद आ रही हैं –

"नव गति, नव लय, ताल छंद नव,
नवल कंठ, नव जलद, मंदन व।
नव नभ के नव वृहग वृंद को
नभ पर नव स्वर दे।

इसी प्रकार, हमारे जीवन में भी नयापन सदैव बना रहे। किंतु हमें ज्ञात है कि समय की धारा सतत् प्रवाहित होती रहती है और हमें प्रतिदिन, प्रतिपल, प्रतिक्षण एक सुनहरा अवसर प्रदान करती है। हमें केवल उसे पहचानने की आवश्यकता है, जिससे हम अपने उज्ज्वल भविष्य के स्वप्न को साकार कर सकें एवं अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सटीक कार्ययोजनाओं पर एकाग्रता से ध्यान लगाकर मेहनत करें।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आप सभी को नव वर्ष की शुभकामना देती हूँ तथा आपके कुशलमंगल की कामना करती हूँ।

– नीलिमा कुमारी

स्वामी तपोवन महाराज

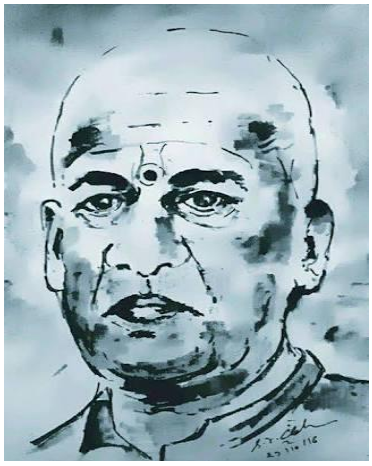

गीता के दसवें अध्याय में भगवान कहते है, ''स्थावरों में मैं हिमालय हूँ, नदियों में मैं गंगा हूँ।'' यदि श्रीकृष्ण अपनी विभूतियों के विषय में आज कहते तो वे अवश्य कहते कि संन्यासियों में मैं 'तपोवनम्' हूँ यह कथन है स्वामी निखिलानन्दजी की।

वे मन्दिर के बिना भगवान, भाषा के बिना वेद हैं – गुरुदेव स्वामी चिन्मयानन्द के इस कथन से प्रतीत होता है, मानो वे ईश्वर के साक्षात् स्वरूप है जिनमें वेद–वेदान्त समाहित है।

स्वामी तपोवन महाराज ज्ञान का एक बिंब, सत्य में पूर्ण, संयम का प्रतीक और वह प्रकाश है जो कभी नहीं कम हुआ। वे आत्मज्ञान के प्राचीन हिमनद हैं, जहाँ से चिन्मय मिशन के संस्थापक स्वामी चिन्मयानन्द के माध्यम से वेदान्तिक ज्ञान की गंगा बह रही है।

स्वामी जी का जन्म मेंडापल्लुर (केरल) में 3 दिसम्बर 1889 को गीता जयन्ती के दिन हुआ था। उनके बचपन का नाम सुब्रह्मण्यम् (चिप्पुकुट्टी) था । पढ़ाई में बहुत अच्छे होने के बावजूद हाई स्कूल में अपनी पढ़ाई छोड़ और संस्कृत एवं आध्यात्मिक पुस्तकें पढ़ने लगे। बाईस साल की उम्र में पिता का साया उठ गया, लेकिन एक संन्यासी का जीवन जीते हुए अपने परिवार की देखभाल करते रहे। जब तैंतीस वर्ष के थे तब उनके भाई ने नौकरी शुरू कर ली और तपोवन महाराज घर त्याग कर विद्वत् संन्यास के राह पर निकल पड़े।

नासिक में गोदावरी नदी के किनारे स्वामी हृदयानन्द के आश्रम में रहकर उन्होंने आध्यात्मिक शिक्षा ली और संन्यास की दीक्षा लेने की इच्छा जाहिर की। लेकिन स्वामी हृदयनन्द ने कहा कि तुम स्वयं ही संन्यास हो, अब तक संन्यासी का जीवन ही जिए हो।

वहाँ से निकलकर स्वामी तपोवन महाराज ने नर्मदा नदी में स्नान करके, सूर्य को साक्षी मानकर, स्वयं मंत्रोच्चार करके 'विद्वत् संन्यास' में प्रवेश किया। उन्होंने अपना नाम दिया ''स्वामी त्यागानन्द।''

स्वामी त्यागानन्द हिमालय के सभी तीर्थस्थानों में घूमते हुए ऋषिकेश में 'कैलाश आश्रम'' के स्वामी जनार्दनगिरि से मिले एवं इन्होंने स्वामी त्यागानन्द जी को उन्हें संन्यास की दीक्षा दी और उनका नाम दिया ''स्वामी तपोवन'' – तपस्या का जंगल।

स्वामी तपोवन ने उतरांचल के उत्तरकाशी के तत्कालीन छोटे, सुदूर पहाड़ी इलाके में रहने का विकल्प चुना। 'तपोवन कुटीर'' नामक उनकी धर्मशाला, एक कमरे का था जिसके सामने पवित्र गंगा नदी बहती थी। स्वामी अपनी सांस्मरिक साँसें 16 जनवरी 1957 सुबह 4:30 बजे ली।

वास्तव में उनका जीवन तपस्या एवं संन्यास की पराकाष्ठा है। समाधि के दिन उन्होंने कहा – ''भगवान को धन्यवाद, अब मैं प्रस्थान कर रहा हूँ।'' ऊँ का उच्चारण किया और यौगिक क्रिया द्वारा प्राण त्याग दिया।

''तस्मै नमः स्वामी तपोवनाय।

तस्मै नमः स्वामी तपोवनाय।।''

प्रेरक प्रसंग

अपनी बुद्धि को और तेज़ करें

– नीलिमा कुमारी

जॉन नाम का एक लकड़हारा पाँच साल से एक कंपनी के लिए काम कर रहा था। इन सालों में उसकी तनख्वाह एक बार भी नहीं बढ़ी थी। उधर एक नए लकड़हारे बिल की एक साल के अंदर ही तरक्की हो गई। यह बात सुनकर जॉन को बहुत बुरा लगा और बात करने के लिए वह अपने मालिक के पास जा पहुँचा। मालिक ने ज़बाव दिया, ''तुम आज भी उतने ही पेड़ काट रहे हो, जितने आज से 5 साल पहले काटा करते थे। हम अपनी कंपनी में अच्छा–से–अच्छा काम चाहते हैं। अगर तुम्हारी उत्पादन क्षमता भी बढ़ जाए, तो हमें तुम्हारी तनख़्वाह बढ़ाने में भी खुशी होगी।''

जॉन वापस चला गया और पेड़ों की कटाई करने में खूब मेहनत से देर तक जुटा रहता। इसके बावज़ूद भी वह बहुत ज़्यादा पेड़ नहीं काट पाया। निराश होकर एक दिन उसने अपनी परेशानी मालिक को बताई। मालिक ने जॉन को बिल के पास जाने की सलाह दी और कहा –'हो सकता है, उसे कुछ मालूम हो, जो हमें और तुम्हें मालूम न हों।'

जॉन ने बिल से पूछा कि वह ज़्यादा पेड़ कैसे काट पाता है। बिल ने बताया कि 'हर पेड़ को काटने के बाद मैं दो–तीन मिनट के लिए रुकता हूँ और अपनी कुल्हाड़ी की धार तेज़ करता हूँ। तुम बताओ कि तुमने आखिरी बार अपनी कुल्हाड़ी की धार कब तेज़ की थी?' बिल की इसी सवाल ने जॉन की आँखें खोल दीं और उसको अपना ज़वाब मिल गया।

– मेरा सवाल यह है कि आपने आखिरी बार कब अपनी कुल्हाड़ी की धार तेज़ की थी ? बीते हुए कल का गौरव और शिक्षा से काम नहीं चलता। हमें अपने ज्ञान की धार को लगातार तेज़ करते रहना पड़ेगा।

जिस तरह हमारे शरीर को रोज़ाना अच्छे खाने की ज़रुरत होती है, उसी तरह हमारे दिमाग को भी रोज़ाना अच्छे विचारों की ज़रुरत होती है।

अगर हम सड़ा–गला खाना खाएँ और अपने दिमाग को घटिया विचारों से भर लें तो शारीरिक और दिमागी, दोनों तौर पर हम बीमार हो जाएँगे। अपने सही रास्ते पर चलने के लिए जरुरी है कि हम अपने दिमाग को सही और अच्छी सोच की खुराक दें।

सीखना तो खाना खाने की तरह है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितना खाते हैं, फर्क़ तो इस बात से पड़ता है कि आप उसमें से कितना पचा सकते हैं।

इसलिए लगातार अच्छी एवं सकारात्मक सोच एवं विचारों से अपने दिमाग की कसरत करनी चाहिए।

नवीन हस्ताक्षर

श्री राम के सच्चे भक्त

– आर्यन अपूर्व, 8/एफ

यह बहुत समय पहले की बात है, जब श्री राम को अयोध्या छोड़कर जाने का आदेश मिला था। उन्हें 14 वर्षों का वनवास मिला था। जब श्री राम अपने महल से निकलें, तब उन्होंने देखा कि अयोध्या की सारी प्रजा महल के बाहर इकट्ठा हो गई है। जब श्री राम बाहर निकले तब प्रजा ने उनसे निवेदन किया कि वह अयोध्या छोड़कर जाएँगे, तो हम भी उनके साथ जाएँगे। श्री राम, पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ रथ में बैठ कर जाने लगे। अयोध्या की सारी प्रजा भी उनके पीछे–पीछे आ रही थी। जब श्री राम एक नदी के किनारे पहुँचे तब वहाँ उन्होंने अपना रथ रोका और अपनी प्रजा से कहा ''आप सभी स्त्री और पुरुष अयोध्या वापस लौट जाएँ और मेरे लौट आने का इंतजार करें। अगर आप मुझे अपना सच्चा राजा मानते हैं तो !'' सारी प्रजा यह सुनकर अयोध्या लौट गई और श्री राम भी वहाँ से चले गए। फिर भी कुछ लोग नदी के किनारे श्री राम के इंतजार में वहीं रुके रहें। 14 वर्षों बाद जब श्री राम रावण का वध करके और अपना वनवास पूरा करके, जब वह अयोध्या वापस लौटे तब उन्होंने देखा कि कुछ लोग अभी तक नदी के किनारे उनका इंतजार कर रहे हैं। उन्हें देखकर माता सीता ने उनसे पूछा कि अब सब यहाँ क्या कर रहे हैं ? उन्होंने उत्तर में कहा ''हम सब यहाँ श्री राम के लौटने का इंतजार कर रहें थे, जो अब पूरा हुआ''। फिर माता सीता ने कहा ''क्या आपने सुना नहीं था कि 14 वर्षों पहले श्री राम ने आपसे क्या कहा था, क्या आप उन्हें अपना सच्चा राजा नहीं मानते ?'' उन्होंने उत्तर में कहा ''माता ! श्री राम ने कहा था की जितने भी स्त्री और पुरुष हैं, वह सभी अयोध्या लौट जाएँ। पर हम न ही स्त्री हैं, न ही पुरुष, तो हम कैसे लौट सकते थे।''
श्री राम उनकी सुधा देखकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उनसे कहा '' आप सभी मेरी प्रजा हैं, मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप सभी मेरे साथ अयोध्या वापस चलिए। अयोध्या आप सभी का स्वागत करती है।''

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें सबका आदर करना चाहिए, चाहे वह कोई भी हो। हम इस कहानी से, श्री राम के इस चरित्र से बहुत कुछ सीख सकते हैं। हमें हर किसी के प्रति उदार हृदय रखना चाहिए, श्री राम की तरह।

लालच का फल

—देबोजीत महातो 4एफ

एक बार की बात है किसी गाँव मे ंदो सहेलियाँ रहती थीं। एक सहेली का नाम राखी और दूसरी सहेली का नाम कमला था। कमला बहुत लालची थी और राखी अच्छी थी।
एक दिन दोनों पानी भरने चलीं। तभी उनकी दृष्टि एक घर पर पड़ती है जिसमें से एक बूढ़ी औरत बोली– ''क्या तुम मेरे लिए पानी भर दोगी?'' कमला बोली, ''चलो यहाँ से''।
तब राखी बोली, ''अरे, कमला, दादी माँ बोल रही है, तो हमें यह कर देना चाहिए। कमला बोली–''मैं इसकी मदद नहीं करुँगी, तुम्हें करना हो तो करो''।
राखी बूढ़ी माँ के घड़े में पानी भर कर दी। तब बूढ़ी माँ दोनों को बुलाती है और कहती है, बेटी मेरे पास बहुत सारे घड़े हैं, क्या तुम दोनों कोई घड़ा लेना चाहोगी ? तो ले सकती हो।'' कमला और राखी इतने सारे घड़े देखकर हैरान हो जाती हैं। तभी कमला की दृष्टि एक सोने के घड़े पर पड़ती हैं। तब कमला बूढ़ी माँ से बोली–''बूढ़ी माँ क्या मैं उस सोने का घड़ा ले सकती हूँ ? बूढ़ी माँ बोली ''ज़रूर तुम ये घड़ा ले सकती हो। वह तभी उस घड़े को ले लेती है। तब बूढ़ी माँ बोलती है – ''राखी क्या तुम कोई घड़ा नहीं लोगी ?'' राखी बोलती है, ''मुझे एक मिट्टी का घड़ा दे दें।
बूढ़ी माँ उसे घड़ा दे देती है। दोनों अपने–अपने घर चले गए। घर पहुँच कर कमला देखती है कि उसके सोने का घड़ा मिट्टी का बन चुका है और राखी के मिट्टी के घड़े में सोने की गहने भरे पड़े हैं। कमला तभी दौड़ कर नदी किनारे जाती है और उस घर को ढूँढ़ती है। वह घर वहाँ से गायब था। तभी आसमान से आवाज़ आती है – ''कमला तुम बहुत लालची हो। इसलिए तुम्हें यह घड़ा मिला है। राखी बहुत अच्छी है, तो उसे घड़े में सोना मिला।
इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि **हमें कभी लालच नहीं करना चाहिए**।

महाराणा प्रताप सिंह

महाराजा प्रताप उदयपुर के मेवाड़ में सिसोदिया राजपूत राजवंश के राजा थे। इन्होंने मुगलों को कई बार युद्ध में पराजित किया था। इसीलिए इतिहास में महाराणा प्रताप सिंह वीरता और दृढ़ प्रण के लिए अमर माने जाते हैं। यह एक ऐसे राजा थे, जिन्होंने मुगल बादशाह अकबर की अधीनता को कभी स्वीकार नहीं किया था।

महाराणा प्रताप सिंह का जन्म 9 मई सन् 1540 को राजस्थान के कुंभलगढ़ में हुआ था। इनके पिता का नाम महाराणा उदय सिंह था एवं माता का नाम महारानी जयवंता बाई था। महाराणा प्रताप के बचपन का नाम कीका था। राणा उदय सिंह की दूसरी पत्नी का नाम धीराबाई था, जिन्हें रानी भटियाणी के नाम से भी जाना जाता था तथा इनके पुत्र का नाम कुंवर जगमाल था। रानी धीराबाई अपने पुत्र कुंवर जगमाल को मेवाड़ का उत्तराधिकारी बनाना चाहती थी। लेकिन महाराणा प्रताप के उत्तराधिकारी बनने पर धीराबाई विरोध में आ गई और जगमाल अकबर से जाकर मिल गया ।

महाराणा प्रताप सिंह मेवाड़ में सिसोदिया राजवंश के राजा थे। उनके कुल देवता एकलिंग महादेव थे। एकलिंग महादेव का मंदिर उदयपुर में स्थित है। मेवाड़ के संस्थापक बप्पा रावल ने आठवीं शताब्दी में इस मंदिर का निर्माण करवाया और एकलिंग मूर्ति की स्थापना भी करवाई थी।

महाराणा प्रताप सिंह ने भगवान एकलिंग की सौगंध खाकर प्रतिज्ञा ली थी कि जिंदगी भर उनके मुख से अकबर के लिए सिर्फ तर्क ही निकलेगा और वह कभी अकबर को अपना राजा नहीं स्वीकार करेंगे।

महाराणा प्रताप सिंह का सबसे प्रिय घोड़ा चेतक था, जो महाराणा प्रताप की तरह काफी बहादुर था। युद्ध के दौरान जब मुगल सेना उनके पीछे थी तब चेतक ने महाराणा प्रताप को अपनी पीठ पर बिठाकर कई फीट लंबे नाले को पार किया था। परंतु अंत में गंभीर रूप से घायल होने के कारण चेतक मारा गया था। चित्तौड़ में आज भी चेतक की समाधि बनी हुई है।

महाराणा प्रताप सिंह का राज्याभिषेक गोगुंदा में हुआ था। महाराणा प्रताप सिंह के पिता उदय सिंह अकबर के डर के कारण मेवाड़ त्याग कर अरावली पर्वत पर डेरा डाल लिये थे और उदयपुर को नई राजधानी बनाया एवं मेवाड़ भी उन्हीं के अधीन था । महाराणा उदय सिंह ने अपने छोटे बेटे जगमाल को मेवाड़ का उत्तराधिकारी बना दिया जिसकी वजह से मेवाड़ की जनता उनके विरोध में आ गई, क्योंकि प्रजा तो महाराणा प्रताप सिंह को पसंद करती थी। जगमाल ने राज्य का शासन हाथ में लेते ही घमंड के कारण प्रजा पर अत्याचार करना शुरु कर दिया। यह सब देखकर महाराणा प्रताप ने जगमाल को समझाने का प्रयास किया कि अत्याचार करके प्रजा को परेशान मत करो। इस राज्य का भविष्य खतरें में पड़ सकता है।

परंतु जगमाल को यह बात अपनी शान के खिलाफ लगी। इसी कारण जगमाल ने महाराणा प्रताप सिंह को राज्य से बाहर चले जाने का आदेश दे दिया। महाराणा प्रताप सिंह अपने घोड़े चेतक के साथ वहाँ से चले गए।

मुगल सम्राट अकबर बिना युद्ध के ही महाराणा प्रताप सिंह को अपने अधीन करना चाहता था। इसलिए अकबर ने महाराणा प्रताप सिंह को समझाने के लिए राजपूतों को उनके पास भेजा लेकिन महाराणा प्रताप सिंह ने अकबर के प्रस्ताव को इनकार कर दिया जिसके परिणामस्वरुप हल्दीघाटी के एतिहासिक युद्ध देखने को मिला।

हल्दीघाटी का युद्ध अकबर और महाराणा प्रताप के बीच 18 जून, सन् 1576 को हुआ था। यह युद्ध महाभारत के युद्ध की तरह भयानक और विनाशकारी था। इस युद्ध में तो न अकबर जीत सका और ना ही महाराणा प्रताप सिंह, क्योंकि मुगलों के पास सैन्य शक्ति अधिक थी और महाराणा प्रताप सिंह के पास जुझारु शक्ति की कमी नहीं थी।

हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप के पास सिर्फ 2000 सैनिक थे और अकबर के पास 50000 सैनिक थे। फिर भी महाराणा प्रताप ने हार नहीं मानी और संघर्ष करते रहे। महाराणा प्रताप सिंह का कवच 72 किलोग्राम और 81 किलोग्राम का था। उनका भाला, कवच, ढ़ाल और तलवार का वजन कुल मिलाकर 208 किलोग्राम का था। महाराणा प्रताप सिंह की मृत्यु के बाद मेवाड़ के सभी सरदारों ने एकत्रित होकर महाराणा प्रताप सिंह को राजगद्दी पर बिठा दिया।राजस्थान के इतिहास में सन् 1582 में दिवेर में युद्ध एक महत्त्वपूर्ण युद्ध माना जाता है क्योंकि इस युद्ध में महाराणा प्रताप के खोए हुए राज्य पुनः प्राप्त हुए थे तथा महाराणा प्रताप सिंह और मुगलों के बीच एक बहुत लंबा संघर्ष युद्ध के रूप में हुआ था।

महाराणा प्रताप सिंह का सबसे बड़ा शत्रु अकबर था परंतु इन दोनों की लड़ाई कोई व्यक्तिगत लड़ाई नहीं थी। जबकि यह लड़ाई उनके अपने सिद्धांतों और मूल्यों की थी। अकबर अपने राज्य का विस्तार करना चाहता था। जबकि महाराणा प्रताप अपनी मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए संघर्ष कर रहा था।

महाराणा प्रताप सिंह की मृत्यु पर अकबर बहुत दुखी हुआ था, क्योंकि वह मन से महाराणा प्रताप के गुणों की प्रशंसा करता था और वह यह भी कहता था कि महाराणा प्रताप सिंह जैसा वीर इस धरती पर दूसरा नहीं है।

शब्द निर्झर–

चित्र देखकर कविता लिखो–

साक्षात्कार

श्री नरमेंद्र कुमार (शिक्षक)
मुख्य समन्वयक, चिन्मय विद्यालय बोकारो

प्रश्न – आपने अपना बचपन किस प्रकार बिताया है ?

उत्तर – मेरा जन्म बिहार के पटना जिले में हुआ है। इसके बाद हम सभी पिताजी के बोकारो स्थानांतरण हो जाने के पश्चात् बोकारो में ही रहने लगे। यहाँ पर जनवृत्त–12 में रहता था, किंतु इसके बाद चीरा–चास में स्वयं के गृह–निर्माण के पश्चात् वहीं रहने लगा। मैंने अपना बचपन बहुत ही उमंग एवं हर्षोल्लास के साथ बिताया है तथा सभी के साथ मैत्रीपूर्ण भाव से रहा हूँ।

प्रश्न – आपने अपनी शिक्षा कहाँ से प्राप्त की ?

उत्तर – मैंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा बोकारो में ही ग्रहण की है। विद्यालयी शिक्षा विशेषकर स्नातक एवं स्नातकोत्तर की शिक्षा हज़ारीबाग स्थित झारखंड के प्रसिद्ध कॉलेज संत कोलंबस कॉलेज से प्राप्त की।

प्रश्न – क्या आपकी रुचि बचपन से ही रसायन विज्ञान में थी ?

उत्तर – मेरी रुचि विशेषकर भौतिक विज्ञान में थी, किंतु किसी कारणवश मैं उसे ले नहीं पाया और अपना रुझान रसायन विज्ञान की ओर किया। वैसे मेरी पकड़ गणित पर भी काफी मज़बूत है।

प्रश्न – क्या बचपन से ही आप एक शिक्षक बनना चाहते थे ?

उत्तर – मेरे परिवार वाले मुझे एक अभियंता बनता हुआ देखना चाहते थे, किंतु मैंने अपने समाज के सर्वांगीण विकास एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए एक शिक्षक बनने का निर्णय लिया, ताकि मेरे देश को एक अच्छा नागरिक मिल सके और मैं अपने ज्ञान को दूसरों के साथ बाँट सकूँ।

प्रश्न – क्या आपने शिक्षक के रूप में अपने कदम सर्वप्रथम चिन्मय विद्यालय में रखे ?

उत्तर – नहीं, मैंने सबसे पहले शिक्षक के रूप में बोकारो के चास स्थित आदर्श विद्या मंदिर में अपना योगदान दिया और 2005 में मैंने चिन्मय विद्यालय, बोकारो में प्रवेश किया।

प्रश्न – आपकी नियुक्ति यहाँ पर किस विषय एवं पद के लिए हुई ?

उत्तर – मेरी नियुक्ति यहाँ ग्यारहवीं–बारहवीं कक्षा हेतु रसायन विज्ञान के लिए हुई । तत्पश्चात् 2011 में रसयान विज्ञान विभाग का विभागाध्यक्ष एवं 2013 में मुख्य समन्वयक बनाया गया। इस प्रकार, मेरी पदोन्नति इस विद्यालय में हुई।

प्रश्न – आपने विद्यालय को सफ़लता ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए क्या–क्या किया ?

उत्तर – मैंने अपना सर्वस्व जीवन अपने चिन्मय विद्यालय, बोकारो की उन्नति के लिए दे दिया है। इसकी सफलता एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए मुझे जो भी कुछ करना पड़े – मैं करुँगा और अपना सौभाग्य समझूँगा। मैंने रसायन विज्ञान के शिक्षक, निरीक्षक दोनों रूप में योगदान दिया है। विद्यालय में कोई भी कक्षा रिक्त न रहे एवं विद्यार्थियों को किसी प्रकार की बाधा न हो – इसके लिए मैं प्रतिदिन कक्षा की सतत् एवं सुचारु ढंग से चलवाने के लिए अनुपस्थित शिक्षकों के लिए अन्य शिक्षकों की व्यवस्था करता हूँ । मुझे सर्वश्रेष्ठ ए सी आर(ACR) का भी अवार्ड मिला है। मैंने शत–प्रतिशत उपस्थिति देकर विद्यालय के कार्य को निरंतर आगे बढ़ाया है । इसके लिए मुझे 2017–18 में सम्मानित भी किया गया। रसायन प्रयोगशाला में आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था करवाई है, ताकि बच्चों को प्रायोगिक शिक्षा मिल सके।

प्रश्न – आपकी रुचि साहित्य के प्रति कैसी है ?

उत्तर – मैंने साहित्य की लहरों में गोता तो नहीं लगाया है, किंतु उसके उत्थान एवं उत्कर्ष की कामना करता हूँ। हिंदी एवं अंग्रेज़ी साहित्यकारों का सम्मान करता हूँ एवं उनके प्रेमियों को नमन करता हूँ।

प्रश्न – क्या आप किसी कार्यशाला के लिए बाहर गए हैं ?

उत्तर – जी हाँ, मैं कार्यशाला के लिए बाहर गया हूँ। 2012 में चिन्मय नेतृत्व, 2015 में चिन्मय वैभव तथा 2019 में नाबेट (NABET) कार्यशाला के लिए मैं कोयम्बटूर गया हूँ।

प्रश्न – आप विद्यार्थियों को इस नव वर्ष पर क्या शुभकामना संदेश देना चाहते हैं ?

उत्तर – सभी को मैं एक ही संदेश देना चाहता हूँ कि वे इस नव वर्ष पर नई कल्पनाशक्ति, नवचेतन एवं नए–नए सोच–विचारों के साथ अपने जीवन की मुश्किलों पर जीत हासिल कर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हों और सफलता हासिल करें।

विविध

चित्र वीथिका

जामिनी रॉय

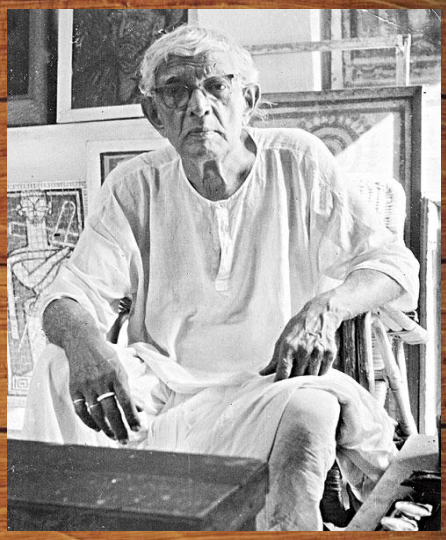

जामिनी रॉय का नाम भारत के महान चित्रकारों में गिना जाता है। वे 20वीं शताब्दी के महत्त्वपूर्ण आधुनिकतावादी कलाकारों में से थे, जिन्होंने अपने समय की कला परंपराओं से अलग एक नई शैली स्थापित करने में अहम् भूमिका निभाई।

वे महान चित्रकार अबनिंद्रनाथ टैगोर के सबसे प्रसिद्ध शिष्यों में एक थे। इनका जन्म 11 अप्रैल, 1887 में पश्चिम बंगाल के बाँकुड़ा जिले में 'बेलियातोर' नाम गाँव में एक समृद्ध ज़मींदार परिवार में हुआ।

प्रेरणा के लिए उन्होंने जीवित लोक कला और आदिवासी कला का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया। 'कालीघाट पेंटिग' उनके लिए सबसे ज्यादा प्रेरणादायक सिद्ध हुई। उसका एक नमूना यहाँ दिया गया है।

इसमें उन्होंने ऐसे चित्र बनाए, जो खुशनुमा ग्रामीण माहैल को प्रकट करते थे। उन्होंने कुछ ऐसे नमूने भी पेश किए, जिसमें ग्रामीण वातावरण के भोले और स्वच्छंद जीवन की झलक देखने को मिलती थी।
इनका निधन 24 अप्रैल, 1972 को कोलकाता में हुआ।
पुरस्कार – सन् 1934 में उन्हें 'मदर हेल्पिंग द चाइन्ड टु क्रॉस ए पूल' चित्र के लिए वायस राय का स्वर्ण पदक प्रदान किया गया।
सन् 1954 में भारत सरकार से उन्हें ' पद्म भूषण' से सम्मानित किया।
सन् 1955 में उन्हें ' ललित कला अकादमी' का पहला फेलो बनाया गया।
सन् 1976 में 'भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण' संस्कृति मंत्रालय और भारत सरकार ने उनकी कृतियों को बहुमूल्य घाषित किया।

महान स्वतंत्रता सेनानी सुभाषचंद्र बोस

– नीलिमा कुमारी

आकाशरूपी जगत में जितने भी चमकते सितारे रुपी महापुरुष हुए हैं, उनमें सर्वाधिक चमकता तारा सुभाषचंद्र बोस हैं, जिन्होंने अपनी बुद्धि, साहस एवं विवेक के प्रकाश से सभी को प्रकाशित किया।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 में कटक (उड़ीसा) में हुआ। वह एक मध्यमवर्गीय परिवार से संबंध रखते थे। 1920 में वह उन गिने–चुने भारतीयों में से एक थे, जिन्होंने आई सी एस की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। 1921 में वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य बने।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस भारतीय राष्ट्रीय संग्राम में सबसे अधिक प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। यह वही महापुरुष हैं, जिन्होंने कहा था –

"तुम मुझे ख़ून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।"

इस नारे के तुरंत पश्चात सभी जाति और धर्मों के लोग खून बहाने अर्थात् देशहित हेतु स्वयं के जीवन को न्योछावर करने के लिए तत्पर हो उठे। इससे यह बात सिद्ध होती है कि कितना अधिक प्रेम एवं श्रद्धा का भाव लोगों के हृदय में सुभाषचंद्र बोस जी के लिए था।

इनके पिता जानकीनाथ एक प्रसिद्ध वकील थे और उनकी माता प्रभा देवी धार्मिक महिला थीं। सुभाषचंद्र बोस बचपन से ही एक मेधावी एवं राष्ट्रप्रेमी छात्र थे। इस बात का प्रमाण हमें उनके द्वारा अपने अंग्रेज़ी अध्यापक की भारत के विरुद्ध की गई टिप्पणी के कड़े विरोध से मिलता है। इसके पश्चात् उन्हें कॉलेज से निकाल दिया गया। तब आशुतोष मुखर्जी ने उनका दाखिला 'स्कोटिश चर्च कॉलेज' में कराया, जहाँ से उन्होंने दर्शन शास्त्र में प्रथम श्रेणी में बी. ए. पास किया। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में एम.ए. भी किया किंतु अंग्रेजों के राज्य में कार्य करने से मना कर दिया।

उन्होंने कई राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लेना प्रारंभ किया। उन्होंने महात्मा गाँधी के नेतृत्व में देशबंधु चित्तरंजनदास के सहयाक के रूप में कई बार स्वयं को गिरफ़्तार कराया। कुछ दिनों के पश्चात् उनका स्वास्थ्य भी उनका साथ नहीं दे रहा था। परंतु उनकी दृढ़–इच्छा शक्ति में कोई अंतर नहीं आया।

उनके अंदर राष्ट्रीय भावना इतनी तीव्र थी कि दूसरे विश्वयुद्ध में उन्होंने भारत छोड़ने का फैसला किया। वे जर्मन चले गए और वहाँ से फिर 1943 में सिंगापुर गए, जहाँ उन्होंने ''इंडियन नेशनल आर्मी'' की कमान सँभाली।

जापान और ज़र्मनी की सहायता से उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने के लिए एक सेना का गठन किया। जिसका नाम उन्होंने ''आज़ाद हिंद फौज़'' रखा। कुछ ही दिनों में उनकी सेना ने भारत के अंडमान निकोबार द्वीप समूह, नागालैंड और मणिपुर में आज़ादी का पताका लहराया ।

किंतु जर्मनी और जापान की द्वितीय विश्वयुद्ध में हार के बाद आज़ाद हिंद फौज को पीछे हटना पड़ा। किंतु उनकी बहादुरी और हिम्मत यादगार बन गई।

ऐसा माना जाता है कि 18 अगस्त, 1945 को उनकी मृत्यु एक विमान दुर्घटना में हो गई। लेकिन आज तक नेताजी की मौत का कोई सबूत नहीं मिला है।

नेताजी की कर्मशीलता, महानता एवं कर्तव्य–परायणता ने उन्हें विश्व के शिखर पर पहुँचा दिया।

पहेलियाँ

- लोहा खींचू ऐसी ताकत है, पर रबड़ मुझे हराता है,
खोई सूई मैं पा लेता हूँ, मेरा खेल निराला है।

- एक पैर है काली धोती,
जाड़े में वह हरदम सोती,
गरमी में है छाया देती,
सावन में वह हरदम रोती।

- एक लाठी की सुनो कहानी,
भरा इसमें है मीठा पानी।

- कद में दिखते छोटे, कर्म के हैं हीन,
कान के पास बजाते बीन, तो बताओ
इसका नाम ?

- एक बहादुर ऐसा वीर,
गाना गाकर मारे तीर।

ज्ञान का दीपक – स्वामी विवेकानन्द

– राधा कुमारी (शिक्षिका)

कहते हैं– धरा जब–जब विकल होती है मुसीबत का समय आता। किसी भी रूप में कोई महामानव चला आता।।

भारत जब ब्रिटिश सरकार के अधीन था, तब, 'उठो, जागो और तब तक मत रूको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाय–जैसा संदेश देकर भारतीयों को जगानें वाले महामानव जिन्होंने भारतीय ज्ञान एवं अध्यात्म का डंका सारी दुनिया में बजाया, वैसे महापुरूष स्वामी विवेकानन्द का परिचय देना सूर्य को दीया दिखाने जैसा है। भला आज उन्हें कौन नहीं जानता । भारतीय युवाओं के बीच उनकी लोकप्रियता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि ये आज भी साठ प्रतिशत से अधिक शिक्षित भारतीय युवाओं के आदर्श हैं। जब संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 1985 ई. को अन्तर्राष्ट्रीय युग वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय लिया तब उसी वर्ष से भारत सरकार ने विवेकानन्दजी के जन्मदिन 12 जनवरी को राष्ट्रीय 'युवा दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की।

स्वामी विवेकानन्द जिनके बचपन का नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था, का जन्म 12 जनवरी सन् 1863 को कलकत्ता के सिमुलिया नामक स्थान में हुआ था। उनके पिता श्री विश्वनाथ दत्त एक प्रख्यात न्यायवादी थे। माता भुवनेश्वरी देवी एक धार्मिक महिला थीं। एक समृद्ध परिवार में जन्म लेने के कारण उन्होंने अच्छे–अच्छे संस्थानों में शिक्षा प्राप्त की। स्कूली शिक्षा के बाद कॉलेज में पढ़ने के दौरान ही उनकी आध्यात्मिक भूख जागृत हुई और वे ईश्वर विश्व मानव आदि के रहस्य जानने के लिए व्याकुल रहने लगे। इसी दौरान उन्हें किसी ने रामकृष्ण परमहंस जी के बारे में बताया, जिनकी विद्वता एवं प्रवचनों की चर्चा कलकत्ता के कई शिक्षण संस्थानों के साथ–साथ सम्भ्रान्त समाज में होने लगी थी। नरेन्द्र दत्त ने भी उनसे मिलने का विचार किया। उन्होंने परमहंस जी से अपनी पहली ही मुलाकात में प्रश्न किया कि क्या आपने ईश्वर को देखा है?'' परमहंस जी ने इस प्रश्न का उत्तर मुस्कुराते हुए दिया।

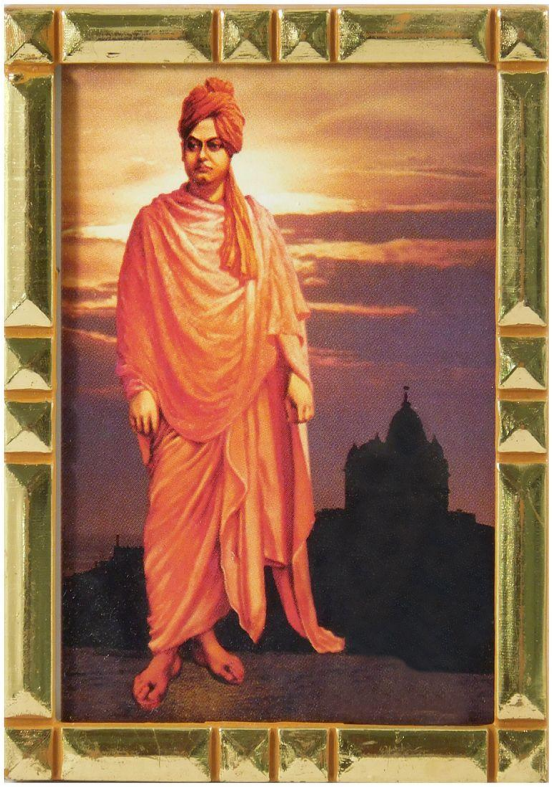

''हाँ मैंने ईश्वर को बिलकुल वैसे ही देखा है, जैसे मैं तुम्हें देख रहा हूँ।'' परमहंस जी के इस उत्तर से नरेन्द्र नाथ दत्त न केवल संतुष्ट हुए बल्कि उसी समय उनको अपना गुरु भी मान लिया। इसी घटना के बाद उन्होंने संन्यास लेने का निर्णय लिया। संन्यास ग्रहण करने के बाद जब वे परिव्राजक के रुप में भारत भ्रमण पर थे , तब खेतड़ी के महाराज ने उन्हें विवेकानन्द का नाम दिया। ठीक ही कहा गया है कि–

तीन सजावत देश को सति , संत और शूर।
तीन लजावत देश को कपटी , कायर , क्रूर।।

विवेकानन्द जी जब तक इस धरा धाम पर रहे उन्होंने देश को सजाया, सँवारा और जब मौका तब विदेशों में भी जाकर अपने देश का परचम लहराया। वर्ष 1893 में जब संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में विश्व धर्म सम्मेलन का आयोजन हुआ, तो

खेतड़ी के महाराज ने ही विवेकानन्द जी को भारत के प्रतिनिधि के रूप में उसमें भाग लेने के लिए भेजा। 11 सितंबर 1893 ई॰ को जब सभा में बोलने की बारी आई, तो उन्हें सबसे कम समय दिया गया, किंतु जैसे ही विवेकानन्द जी ने श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहा– ''मेरे प्रिय अमेरीकी भाइयों–बहनों, माताओं एवं पिताओं। वैसे ही तालियों की गड़–गड़ाहट से वहाँ का वातावरण गूँज उठा। श्रोता गण बड़े ही आश्चर्यचकित थे, चूँकि अब तक वे इसी भ्रम में थे कि भला इस गरीब भारतीय के पास बोलने को क्या खास हो सकता है। किंतु मन को परिवर्तित होने में क्षण भर का मात्र समय लगा । सभी के मन में यही विचार उठने लगा कि पराए देश के लोगों को यह प्राणी अपना भाई–बहन और माता–पिता कहकर संबोधित कर रहा है। उसके बाद स्वामी जी ने हिन्दू धर्म एवं भारत के अध्यात्म की बात करनी शुरू की, तो अमेरिका का शिकागो ही नहीं दुनिया भर के विद्वत जनों का एक बड़ा समूह चुपचाप सुनता रहा । इसके बाद 27 सितंबर तक वह धार्मिक सम्मेलन चला। इन सत्रह दिनों में उनके व्याख्यान सुनने वालों की संख्या में निरंतर वृद्धि होती रही। धार्मिक ही नहीं साहित्यिक, सामाजिक एवं वैज्ञानिक जगत के लोग भी उनके व्याख्यान को सुनने के लिए आने लगे। कहा तो यह भी जाता है कि उस सम्मेलन में सभी प्रतिनिधि अपने–अपने देश की धार्मिक पुस्तकें लेकर आए थे। उन पुस्तकों को जब सजाकर रखा गया(एक के ऊपर एक) तो स्वामी जी जो अपने साथ श्रीमद्भगवद्गीता लेकर गए थे, उसे सबसे नीचे स्थान मिला, यानी उसको सबसे नीचे रखा गया। उसे देखकर विवेकानन्द जी ने जो वाक्य कहे, सबके दाँत खट्टे हो गए। उन्होंने कहा– 'पवित्र गीता में इतनी शक्ति है कि यह पूरे देश की हो सकती है।'

विश्व–धर्म सम्मेलन की यह घटना उन दिनों की है जब हमारा भारत ब्रिटिश सरकार के अधीन में था। पश्चिम जगत के लोग भारतीयों को बहुत ही हीन दृष्टि से देखते थे। उनका मानना था कि भारत में विद्वानों का नितान्त अभाव है एवं यह देश हर मामले में पिछड़ा है। विवेकानन्द जी ने उनके इस भ्रम को ऐसे चकनाचूर कर दिया जैसे कोई शीशा टूटकर होता है।

स्वामी जी ने अपने जीवन काल में अनेक देशों की यात्राएँ की। सन् 1897 में जब वे स्वदेश लौटे तो उनका जबरदस्त स्वागत और सम्मान हुआ। 1 मई 1897 को उन्होंने कोलकाता में हुगली नदी के किनारे रामकृष्ण मिशन' की स्थापना कर आजीवन पूरे मानवता की सेवा की।

स्वामी जी ने अपने जीवनकाल में विश्व के अनेक स्थानों पर अध्यात्म, भारतीय सनातन धर्म, योग इत्यादि विषयों पर अनेक व्याख्यान दिए । उनके व्याख्यानों के संग्रह को रामकृष्ण मिशन ने अनेक पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया है। उनकी कई प्रसिद्ध रचनाएँ हैं' – जिनमें 'राजयोगः', 'कर्मयोग', 'ज्ञानयोग' एवं 'भक्तियोग' प्रमुख हैं।

आजीवन अविवाहित रहकर रामकृष्ण मिशन के माध्यम से स्वामी जी ने गरीबों की भलाई एवं सेवा की । भारतीय नारियों की दशा में सुधार के लिए भी उन्होंने अनेक कार्य किए। उनका मानना था कि 'किसी भी देश की प्रगति तभी सम्भव है, जब वहाँ की नारियाँ शिक्षित हो। सन् 1901–02 में जब कोलकाता में प्लेग जैसी भयंकर बीमारी फैली थी, तब उन्होंने उस वक्त जी भरकर दीन–दुखियों की सेवा की । उस दौरान उन्हें अपने स्वास्थ्य तक का ख्याल न रहा। वे अस्वस्थ हो गए। अंततः 4 जुलाई 1902 को मात्र 39 वर्ष की आयु में उन्होंने अपना तन त्याग दिया। देश को इससे जो क्षति हुई उन्हें शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। हमें नाज़ है और ताज है भारत माँ के इस लाल पर । ईश्वर करे ऐसे महामानव का जन्म इस धरा धाम पर बार–बार हो। अंत में मुझे महाकवि जयशंकर प्रसाद जी की चंद पंक्तियाँ याद आ रही हैं जो विवेकानन्द जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर खरा उतरती है –

धन रहने पर भी चंचलता नहीं जवानी में।
जिसने देखी उनकी महानता वही पड़ा हैरानी में।

सरस्वती वंदना

या कुंदेन्दुतुषारहार – धवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकर – प्रभृतिभिः देवैः सदा पूजिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।

सरस्वति नमस्तुभ्यं, वरदे कामरुपिणि
विद्यारंभं करिष्यामि, सिद्धिर्भवतु मे सदा।।

आप सभी को वसंत पंचमी की हार्दिक शुभकामनाएँ .....

– आभा सिंह

मकर संक्रांति का त्योहार हिंदू धर्म के प्रमुख त्योहारों में शामिल है जो सूर्य के उत्तरायण होने पर मनाया जाता है जब वह मकर रेखा से गुजरता है।

ज्योतिष की दृष्टि से देखें तो इस दिन सूर्य धनु राशि को छोड़कर मकर राशि में प्रवेश करता है और सूर्य के उत्तरायण की गति प्रारंभ होती है। वर्तमान शताब्दी में यह त्योहार जनवरी माह के चौदहवें या पन्द्रहवें दिन ही पड़ता है।

भारत के अलग–अलग क्षेत्रों में मकर संक्रांति के पर्व को अलग–गलग तरह से मनाया जाता है। आंध्र प्रदेश, केरल, कर्नाटक में इसे संक्रांति कहा जाता है। और तमिलनाडु में इसे पोंगल पर्व के रूप में मनाया जाता है। पंजाब और हरियाणा में इस समय नई फ़सल का स्वागत किया जाता है। और लोहड़ी पर्व मनाया जाता है, वहीं असम में बिहु के रुप में इस पर्व को उल्लास के साथ मनाया जाता है। हर प्रांत में इसका नाम एवं इसे मनाने का तरीका अलग–अलग होता है।

दाल और चावल की खिचड़ी इस पर्व की प्रमुख पहचान बन चुकी है विशेष रुप से गुड़ और घी के साथ खिचड़ी खाने का महत्त्व है । इसके अलावा तिल और गुड़ का भी मकर संक्राति पर बेहद महत्त्व है। इसदिन सुबह जल्दी उठकर तिल का उबटन कर स्नान किया जाता है।

मकर संक्रांति को स्नान एवं दान का भी पर्व कहा जाता है। इस दिन तीर्थों एवं पवित्र नदियों में स्नान का विशेष महत्त्व हैं ऐसा माना जाता है कि इस दिन किए गए दान से सूर्य देवता प्रसन्न होते है। महाभारत में भीष्म पितामह ने सूर्य के उत्तरायण होने पर ही माघ शुक्ल अष्टमी के दिन स्वेच्छा से शरीर का परित्याग किया था। उनका श्राद्ध संस्कार भी सूर्य की उत्तरायण गति में हुआ था। फलतः आज तक पितरों के सम्मान में लोग दान–पुण्य करते हैं।

इस दिन लोग बड़े उत्साह एवं उल्लास के साथ पतंगबाजी भी करते हैं।

गणतंत्र दिवस

— नीलिमा कुमारी

हमारी मातृभूमि भारत लंबे समय तक ब्रिटिश शासन की कड़ी बेड़ियों में जकड़ी हुई थी। इस दौरान भारतीयों को ब्रिटिश सरकार द्वारा बनाए गए कानूनों का सख्ती से पालन करना पड़ता था । इस जंज़ीर को तोड़ने के लिए भारतीयों ने अथक प्रयास किया एवं स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा लंबे संघर्ष के बाद अंततः 15 अगस्त 1947 को भारत को आज़ादी मिली। लगभग 2 वर्ष 11 महीने और 18 दिनों के पश्चात् 26 जनवरी 1950 को हमारी संसद द्वारा भारतीय संविधान को लागू किया गया, जिसके तहत् भारत एक संप्रभु, लोकतांत्रिक, गणराज्य घोषित हुआ। इसके बाद से भारत में 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। उस दिन लार्ड माउंटबेटन (गर्वनर जनरल) के स्थान पर डॉ राजेन्द्र प्रसाद हमारे राष्ट्र के प्रथम राष्ट्रपति बने। भारत में निवास कर रहे लोगों और विदेशों में रह रहे भारतीयों के लिए गणतंत्र दिवस का उत्सव मनाना सम्मान की बात है। इस दिन सार्वजनिक अवकाश होता है। यह हमारा राष्ट्रीय त्योहार है। देश के कोने–कोने में प्रभात फेरियाँ निकाली जाती हैं।

इस दिन भारत की राजधानी नई दिल्ली में राष्ट्रपति की राजकीय सवारी निकाली जाती है। विजय चौक पर राष्ट्रपति जी जल, थल एवं वायु सेना की सलामी लेते हैं। तीनों सेनाओं की टुकड़ियाँ मार्च करती हुई लाल किले तक पहुँचती है। अनेक प्रांतों से आए लोक–नर्तक अपनी–अपनी वेशभूषा में अपने–अपने लोक–नृत्य–प्रदर्शन तथा विभिन्न प्रकार की झाँकियों से अपनी प्राचीन संस्कृति व प्रगति का परिचय देते हैं।

विद्यालय, कार्यालय, सार्वजनिक स्थलों इत्यादि में भी गणतंत्र दिवस के अवसर पर पूरा जन–समुदाय उपस्थित होकर उत्साह एवं खुशी के साथ ध्वज फहराकर, उसे सलामी देकर राष्ट्र–प्रेम एवं देशभक्ति का परिचय देता है।

26 जनवरी की संध्या को आतिशबाजी छोड़ी जाती है तथा रात्रि के समय सरकारी भवनों पर रोशनी की जाती है। देश की एकता, अखंडता एवं स्वतंत्रता को बनाए रखने की प्रतिज्ञा की जाती है।

इस प्रकार 26 जनवरी 1950 को देश में अपना संविधान, अपना राष्ट्रपति, अपनी सरकार तथा अपना राष्ट्रीय ध्वज हो जाने पर भारतवर्ष संसार का सबसे बड़ा गणतंत्र राष्ट्र बन गया।

जय हिंद, जय भारत

कथा – संसार

अधूरी कहानी

एक समय की बात है। एक गाँव में एक गरीब परिवार रहता था। वहाँ दो बहनें रहती थीं। एक का नाम अनामिका एवं दूसरी का नाम सुधा था। उन दोनों बहनों में अनामिका बहुत विनम्र स्वभाव की थी किंतु सुधा स्वभाव से थोड़ा गुस्सैल थी एवं अनामिका से ईर्ष्या करती थी। एक बार दोनों एक घने जंगल में गए और देखा कि.....

कुछ दिलचस्प बातें

1. इंसान का दिमाग (जागते समय) इतनी ऊर्जा उत्पन्न करता है कि एक 40 वॉट का बल्ब चौबीस घंटे जलाया जा सकता है।
2. मनुष्य में पच्चीस प्रतिशत हड्डियाँ उसके पैरों में पाई जाती है।
3. एक छिपकली का दिल एक मिनट में एक हजार बार धड़कता है।
4. दुनिया की सबसे बड़ी दीवार चीन की है पर दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी दीवार राजस्थान के कुम्भलगढ़ किले की दीवार है। यह किला 36 किलोमीटर लंबा है।
5. भारत ने अपने दस लाख (10,00,000) वर्षों के इतिहास में किसी देश पर हमला नहीं किया।

– श्रुति, 9/सी

प्रश्नोत्तरी

1. 'राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय' कहाँ है ?
2. 'मुट्ठी गरम करना' का क्या अर्थ है ?
3. 'सापेक्ष' का विलोम शब्द क्या है ?
4. 'अथ' का विलोम शब्द बताएँ ?
5. 'रामलला नहछू' किसकी रचना है ?
6. 'प्रभु जी तुम चंदन हम पानी।
   जाकी अंग–अंग वास समानी।।''
   – किस संत कवि की पंक्तियाँ हैं ?
7. 'रंगभूमि' उपन्यास के लेखक कौन हैं ?
8. 'बंग महिला' का वास्तविक नाम क्या है ?
9. प्रेमचंद की अंतिम कहानी कौन–सी है ?
10. प्रेमचंद किस नाम से कथा साहित्य लिखते थे ?
11. जयशंकर प्रसाद की पहली कहानी 'ग्राम' किस पत्रिका में प्रकाशित हुई ?
12. 'चीफ की दावत' – किसकी रचना है ?
13. किस कहानीकार की कहानियों को 'ब्रेन ट्यूमर की कहानियाँ' कहा जाता है ?
14. फिल्म 'तीसरी कसम' फणीश्वरनाथ रेणु की किस कहानी पर आधारित है ?
15. 'पूस की रात' कहानी का मुख्य पात्र कौन है ?

(सही उत्तर पृष्ठ संख्या–37)

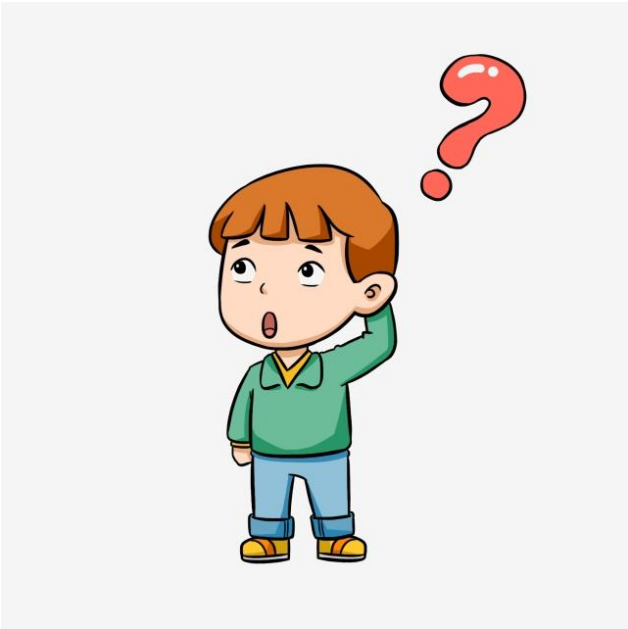

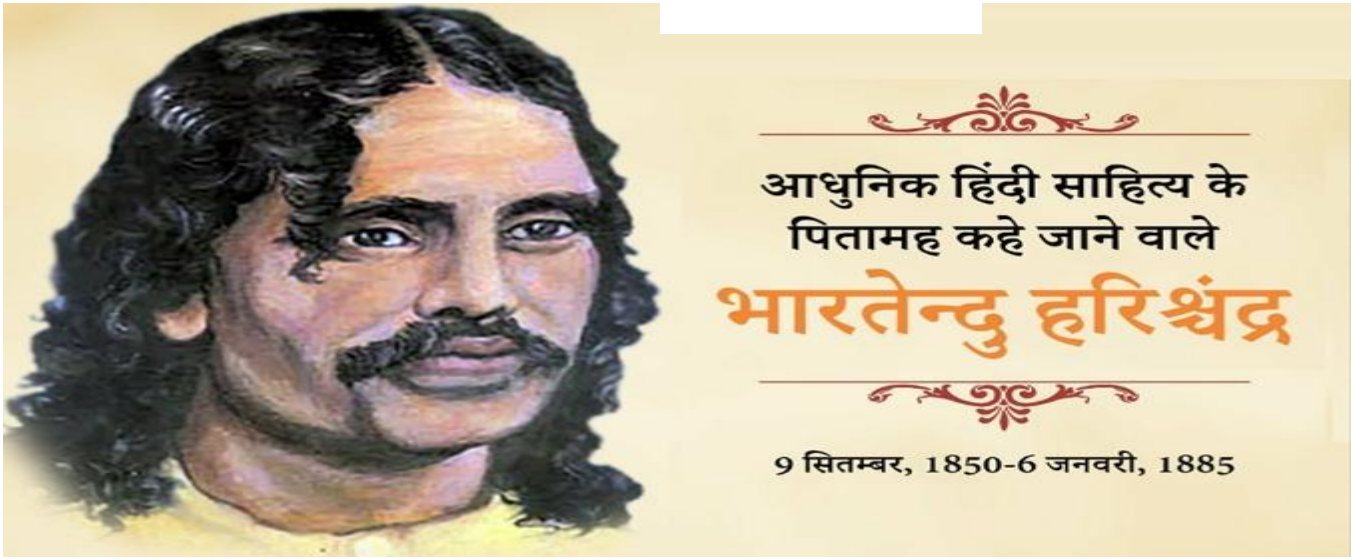

जीवन–परिचय : भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म वाराणसी के सम्पन्न परिवार में 1850 ई. में हुआ था। इनके पिता का नाम गोपाल चंद्र और माँ का नाम पार्वती था । इनके पिता ब्रजभाषा में गिरिधरदास के नाम से कविता करते थे। जब वे पाँच वर्ष के थे, तब माँ का और तेरह वर्ष के होते–होते पिता का भी देहांत हो गया था। साहित्य के संस्कार भारतेंदु को बचपन से ही घर पर लगने वाली साहित्यिक मंजलिसों से प्राप्त होने लगे थे। हिंदी, उर्दू और अंग्रेज़ी भाषा की अधिकांश शिक्षा भी इनकी घर पर ही सम्पन्न हुई। कुछ समय तक काशी के क्वींस कॉलेज में ही इन्होंने अध्ययन किया। 25 जनवरी, 1885 में मात्र 35 वर्ष की अल्पायु में इनका निधन हो गया।

हरिश्चंद्र के प्रखर व्यक्तित्व और साहित्यिक अवदान से प्रेरित होकर 1880 में 'सार–सुधानिधि' पत्रिका में साहित्यकारों ने इन्हें 'भारतेंदु' की उपाधि से अलंकृत करने का प्रस्ताव रखा। तभी से इन्हें भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाम से जाना जाने लगा। यह उपाधि हरिश्चंद्र को अंग्रेज़ों द्वारा राजा शिवप्रसाद को 'सितारेहिंद' की उपाधि से विभूषित किए जाने की प्रतिक्रिया के रुप में इनके साहित्यिक मित्रों ने इन्हें दी थी। बाद में ये इसी नाम से पहचाने जाने लगे।

साहित्यिक योगदान – भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी में साहित्यिक पत्रकारिता का सूत्रपात किया, जिससे हिंदी भाषा और उसके साहित्य के प्रचार–प्रसार में पर्याप्त सहायता मिली। 1868 ई. में इन्होंने –'कवि–वचन–सुधा' और 1873 ई. में 'हरिश्चंद्र मैगजीन' पत्रिका निकाली। इसके बाद 1884 ई. में इन्होंने नारी शिक्षा हेतु 'बाला–बोधिनी' पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया। इनकी उदारता लगन और साहित्यिक नेतृत्व की क्षमता से प्रभावित होकर हिंदी साहित्यकारों का एक मंडल भी इनके इर्द–गिर्द तैयार हो गया, जिसे ' भारतेंदु मण्डल' के नाम से जाना जाता है। इनमें पं. बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', पं. प्रताप नारायण मिश्र, पं. बालकृष्ण भट्ट, अम्बिकादत्त व्यास, पं. राधाचरण गोस्वामी, ठाकुर जगमोहन सिंह, लाला श्रीनिवास के नाम उल्लेखनीय हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में उन्होंने लगभग 20 वर्षों में 175 ग्रंथों की रचना की।

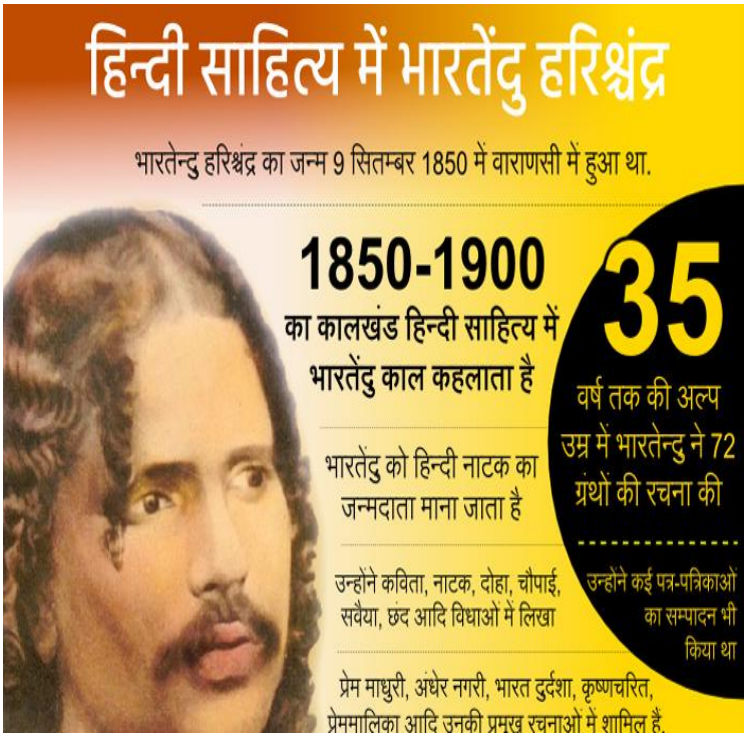

भारतेंदु की काव्य–रचना में इनकी भक्ति–भावना की प्रमुखता के बावजूद, श्रृंगार, राजभक्ति और देशभक्ति की भावना भी उजागर हुई है इनकी भक्ति संबंधी रचनाएँ कृष्ण भक्त कवियों की परंपरा को ही पुनर्जीवित करती है। श्रृंगार के संयोग–वियोग चित्रण में रीतिकालीन मनोवृति की हल्की झलक दिखाई देती है। भारतेंदु ने राजभक्ति से संबंधित कुछ कविताएँ भी लिखी हैं। इसके बावजूद, भारतेंदु की देशभक्ति संबंधी रचनाएँ अधिक महत्वपूर्ण हैं। इन्होंने अंग्रेज़ी शासन और भारतीय जनता के मध्य उपस्थित अंतर्विरोध को अच्छी तरह समझा था। इसे व्यक्त करते हुए इन्होंने लिखा है–

"अंगरेज राज सुख–साज सज्यौ है भारी,

पै धन विदेश चलि जात इहै अति रब्बारी।"

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने ब्रिटिश शासन की व्यावसायिक वृत्ति को भारत की दुर्दशा का कारण भी माना है । उनके लिए विदेशी वस्तुओं का त्याग मात्र प्रमुख मुद्दा न होकर स्वदेशी भाषा, स्वदेशी संस्कृति, स्वदेशी चिंतन, स्वदेशी आचरण आदि सभी स्वदेशी के अंतर्गत आ जाते हैं।

'हिंदी वर्द्धिनी सभा' में स्वभाषा पर अपने काव्य–भाषण में इन्होंने स्पष्ट रुप से अपने भाषा–प्रेम और उसके महत्त्व को इस प्रकार रेखांकित किया है–

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

अपने नाटकों, मुकरियों, निबंधों, समसामयिक समस्याओं से संबद्ध टिप्पणियों आदि के द्वारा भारतेंदु हरिश्चंद्र ने जो व्यापक सुधार आंदोलन छेड़ा था, उसमें स्वभाषा ज्ञान की विशेष भूमिका थी।

भारतेंदु हरिश्चंद्र की एक बहुत बड़ी विशेषता है – उनकी व्यंग्यात्मक शैली। अपनी कविताओं विशेषकर गद्य साहित्य में उन्होंने धार्मिक पाखंड, बाल–विवाह, विधवा–विवाह, रुढ़िवादी नीति–रीति इत्यादि के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को उकेरा है। उन्होंने कई प्रमुख काव्य एवं नाटकों की रचना की है। यथा –

काव्य – प्रेम मल्लिका, प्रेम सरोवर, प्रेम माधुरी, प्रेम तरंग, प्रेम–पचासा, प्रेम–प्रताप, विजयपताका इत्यादि।

नाटक – भारत–दुर्दशा, अंधेर नगरी, वैदिक हिंसा हिंसा न भवति।

भारतेंदु हरिश्चंद्र का समस्त साहित्य नागिरी–प्रचारिणी सभा से प्रकाशित ' भारतेंदु ग्रंथावली' में संग्रहित है।

इस प्रकार वे एक प्रखर एवं मार्तंड रचनाकार थे।

हँसी के गोलगप्पे–

1. अध्यापक – मैंने गोलू को थप्पड़ मारा, इसका भविष्यत काल बताओ।
गोलू – सर जी, छुट्टी के बाद अपनी बाइक पंक्चर मिलेगी।

2. अध्यापक – भारत की सबसे खतरनाक नदी कौन –सी है ?
बच्चा – भावना ! क्योंकि इसमें सब बह जाते हैं।

3. अध्यापक – एक टोकरी में 10 आम थे 3 सड़ गए तो कितने आम बचेगा?
पप्पू – 10
अध्यापक – वो कैसे ?
पप्पू – जो सड़ गए वे भी तो आम ही रहेंगे। सड़ने से केले थोड़ी बन जायेंगे।

4. शिक्षक – बस इरादे बुलन्द होने चाहिये, पत्थर से भी पानी निकाला जा सकता है।
टिकू – मैं तो लोहे से भी पानी निकाल सकता हूँ सर !!
शिक्षक – कैसे ??
टिंकू – हैंड पम्प से !!

5. अध्यापक – सबसे लम्बा साँप कहाँ पाया जाता है ?
बच्चा – लूडो के 99 वाले खाने में।

6. पति – आलू के पराठे में आलू नज़र नहीं आ रहा ।
पत्नी – कश्मीरी पुलाव में कश्मीर नज़र आता है क्या ?

7. बंता – क्या कर रहे हो ?
संता – बदला ले रहा हूँ।
बंता – किससे ?
बच्चा – वक्त ने मुझे बर्बाद किया है।
मैं अब वक्त को बर्बाद कर रहा हूँ।

8. बिहारी अस्पताल में एक बच्चा पैदा होती ही नर्स से बोला :
भूख लगी है,नाश्ते में क्या है ?
नर्स – लिट्टी–चोखा।
बच्चा – ई का, दुबारा बिहार में आ गईनी का रे।

9. संता नौकर से – ज़रा देख तो, बाहर सूरज निकला या नहीं ?
नौकर – बाहर तो अँधेरा है।
संता – अरे तो टॉर्च जलाकर देख ले कामचोर।

10. पप्पू नहाने के लिए बाथरुम की तरफ़ बढ़ रहा था कि . . .
न्यूज चैनल पर ठंड से तीन लोगों की मौत की खबर सुनी . . .
खबर सुनकर पप्पू ने वापस कपड़े पहन लिए और बोला . . .

नई पौध

हिंदी

– श्रुति,9/सी

हिंदी हमारी मातृभाषा है।
हिंदी हमारी गौरवता ।।
हिंदी से मेरी पहचान।
हिंदी मेरी परिभाषा।।
हिंदी से घबराते क्यों हो।
हिंदी को ठुकराते क्यों हो।।
नई–नई भाषाओं से
हिंदी को नीचा दिखाते क्यों हो।
हिंदी को तुमने जन्मा है।
हिंदी तुम्हारी बेटी है।।
अपनी ही बेटी को तुम।
यूँ पीठ दिखलाते क्यों हो।।
हिंदी से तुम मत घबराओ।
हिंदी से तुम मत घबराओ।
हिंदी को तुम मत ठुकराओ।
क्योंकि, हिंदी हमारी मातृभाषा है।
हिंदी हमारी गौरवता।
जय हिंद, जय भारत।

शूरवीर फिर आएगा

– करण कुमार ४/एफ

तू आज भी है तू कल भी था
हर युग में तेरा वास हुआ है,
थे शूरवीर हर उस कल में
हर युग में तेरा नाश हुआ है।
कई पल जीत लिए तुमने
हरपल जीत न पाएगा,
समय बस रेखा पार करे
एक शूरवीर फिर आएगा।
राज था जब रावण का
अनंत अहंकार में वह डूबा था,
चल दिया सीता को साथ लिए
लक्ष्मण रेखा के पार लिए।
जब समय की सीमा पार हुई
चल दिए लंका को रामचंद्र
हनुमान, लक्ष्मण, वानर सेना को साथ लिए
रावण फिर राज न कर पाया था।
एक शूरवीर फिर आया था,
एक शूरवीर फिर आया था।
शैतान तू कितना भी हो
हर बुराई अपने साथ लिए,
खुशहाली के उजियारे में
अंधकार का दीया अपने हाथ लिए
जब भी तू आजादी से
गगन में गोते लगाएगा
अबंर का सीना चीरकर
एक शूरवीर फिर आएगा,
एक शूरवीर फिर आएगा।

जब समय का चरखा और चला
नये युग का आरंभ हुआ,
थी क्रूरता बड़ी हुई
थी भाई–भाई दुश्मनी चढ़ी हुई।
हाँ महाभारत की इस गाथा में
एक नये युद्ध का प्रारंभ हुआ
दुर्योधन भी कपटी मामा,
अंगराज को साथ लिए
कुरुक्षेत्र में पांडवों पर,
विजय के सुनहरे अरमान लिए
युद्ध से एक सूरज पहले की बात है।
कौरव भी है और पांडव भी चिंतित हैं
दोनों दल विजय से वंचित है
अरे ! महारथी अर्जुन को,
श्री कृष्ण ने तिलक लगाया था
पर दुर्योधन समझ न पाया था
एक शूरवीर फिर आया था,
एक शूरवीर फिर आया था।
मन्द–मन्द समय पार हुआ
कलयुग का यह पड़ाव हुआ,
अब पशु मानव से
ज़्यादा वफ़ादार हुआ
रूप लिए तुमने कई–कई
भ्रष्टाचार, आतंकवाद जैसी बातें सीखीं
तू अब कितने रूप दिखाएगा
अगर हर युग शूरवीर आया है,
तो इस युग में कब वो आएगा ?

गर्व है चिन्मय विद्यालय पर

– केसर कुमारी/8–ई

गर्व है मुझे अपने
माता और पिता पर
नामांकन करवाया मेरा
चिन्मय विद्यालय में।
वहाँ जाने से मुझे
मिला अलग संसार
सगे–संबंधों के अलावा
अपने शिक्षकों का प्यार।
संस्कार, प्रार्थना और धर्म
क्या है नहीं जानती थी,
सब जाना वहाँ पर जाकर
राम, कृष्ण और भागीरथी।
विश्व का सबसे प्यारा विद्यालय
जहाँ सिखा रहे जीवन जीने की कला
हम सब विद्यार्थियों का आलय
जहाँ केवल सोचते जग का भला।
गर्व है मुझे अपने आप पर
क्योंकि पढ़ती हूँ चिन्मय विद्यालय में।

अध्यापक

– श्रुति, 9/सी

अध्यापक वही है जो जीना सिखा दें,
तुमसे तुम्हारी पहचान करा दे।।
कर दें कायाकल्प जो तुम्हारा,
सच और झूठ को साकार करा दें।।
तराश दें हीरें की तरह,
दुनिया की रास्तों पर चलना सिखला दें।।
हमेशा दिखाए अच्छा मार्ग वे तुम्हें,
तुम्हें एक अच्छा इन्सान बना दें।।
मुश्किलों से लड़ कर आगे बढ़ते जाओ तुम,
तुम्हें वे इतना समझदार बना दें।।
सिखाए वे तुम्हें,
जीत जाना हीं सबकुछ नहीं,
हार कर जीत जाने का,
हुनर जो सिखा दें।।

एक वृक्ष

– करण कुमार

मैं पूछता हूँ आज तुम से
क्या ये लोक तुमने सजाया
निर्दयता से काट डाला
क्या एक वृक्ष तुमने लगाया?
सुना है एक काल था
गाँव के सरोवर में जल कभी सूखा नहीं,
एक साल है यह देख लो
सरोवर में जल कभी रूका नहीं।
लीन थे तुम प्रोद्यौगिकी में
दूषित कर दिया जग को,
बात जब आई ज़िन्दगी की
मार डाला तुम ने खुद को ।
मैं पूछता हूँ आज तुम से
वृक्षारोपण का नारा लगाया,
लेकिन क्या अपने पूरे जीवन में
तुमने एक वृक्ष भी लगाया ?

रुदन

– अखलाक, ४/ए

मैं तो हूँ पेड़,
पर फिर भी क्यों काटा जाता हूँ,
क्यों मैं लोगों के आनंद के लिए,
उनमें बाँटा जाता हूँ।
मेरे बिना न किसी का जीवन,
मेरा विनाश होगा, तुम्हारा मरण।
मैं देता हूँ तुम्हें बारिश,
मुझे न काटो मेरा आदर करो,
यही है मेरी ख्वाहिश।
कोई चोट पहुँचाए तो,
दर्द बड़ा ही होता है,
पर जो दर्द खाकर भी,
तुम्हारे बारे में सोचें,
वही असली इंसान होता है।
तुम आनंद से जीयो,
इसलिए कुल्हाड़ी खाता हूँ,
तुम्हारी प्यास बुझाने के लिए
ही वर्षा लाता हूँ।
फिर भी मैं तुममें
न जाना जाता हूँ
मैं तो हूँ हरा,
फिर भी क्यों काटा जाता हूँ।

क्लास मॉनीटर

– प्रत्युष कुमार, 8 /सी

जो क्लास में बने मॉनीटर
कोरी ज्ञान दिखाते हैं।
आता जाता कुछ भी नहीं
पर हम पर रौब जमाते हैं।

जब क्लास में टीचर नहीं
तो खुद टीचर बन जाते हैं।
कॉपी, पेंसिल, चॉक लेकर
बस नाम लिखने लग जाते हैं।

खुद तो हमेशा बात करें,
हमें चुप करवाते हैं।
अपनी तो बस गलती माफ़
हमारी बलि चढ़ाते हैं।

क्लास वे संभाल पाते नहीं
बस चीखते और चिल्लाते हैं।
भगवान बचाए इन मॉनीटरों से
इन्हें हम नहीं चाहते हैं।

हम हैं पक्षी उड़ते गगन के

–सात्विक उपाध्याय

हम हैं पक्षी उड़ते गगन के
हम को चुप ना कराना,
हमें उड़ने देना सदा
हमपर बोझ न डालना।

हमें चाहिए खुला आसमान
न हो उसमें दुःख के बादल ,
पर अगर दुःख हमें मिले
तो मिटा उसका आज और कल।

हमें आसमान में ऊपर जाना है
हमें कदम बढ़ाते जाना है,
झुकना नहीं है हमें मुसीबतों के सामने
हमें जीवन को बेहतर बनाना है।

हमपर जोर आजमाने की
नाकाम कोशिश तुम ना करना,
हमें नीचे गिराने की,
तुम ना कभी कामना करना।

हम हैं देश का उज्ज्वल भविष्य
हमें करना है देश का नाम रोशन
हमारी कोशिश से ही
बनेगा एक भारत अथक।

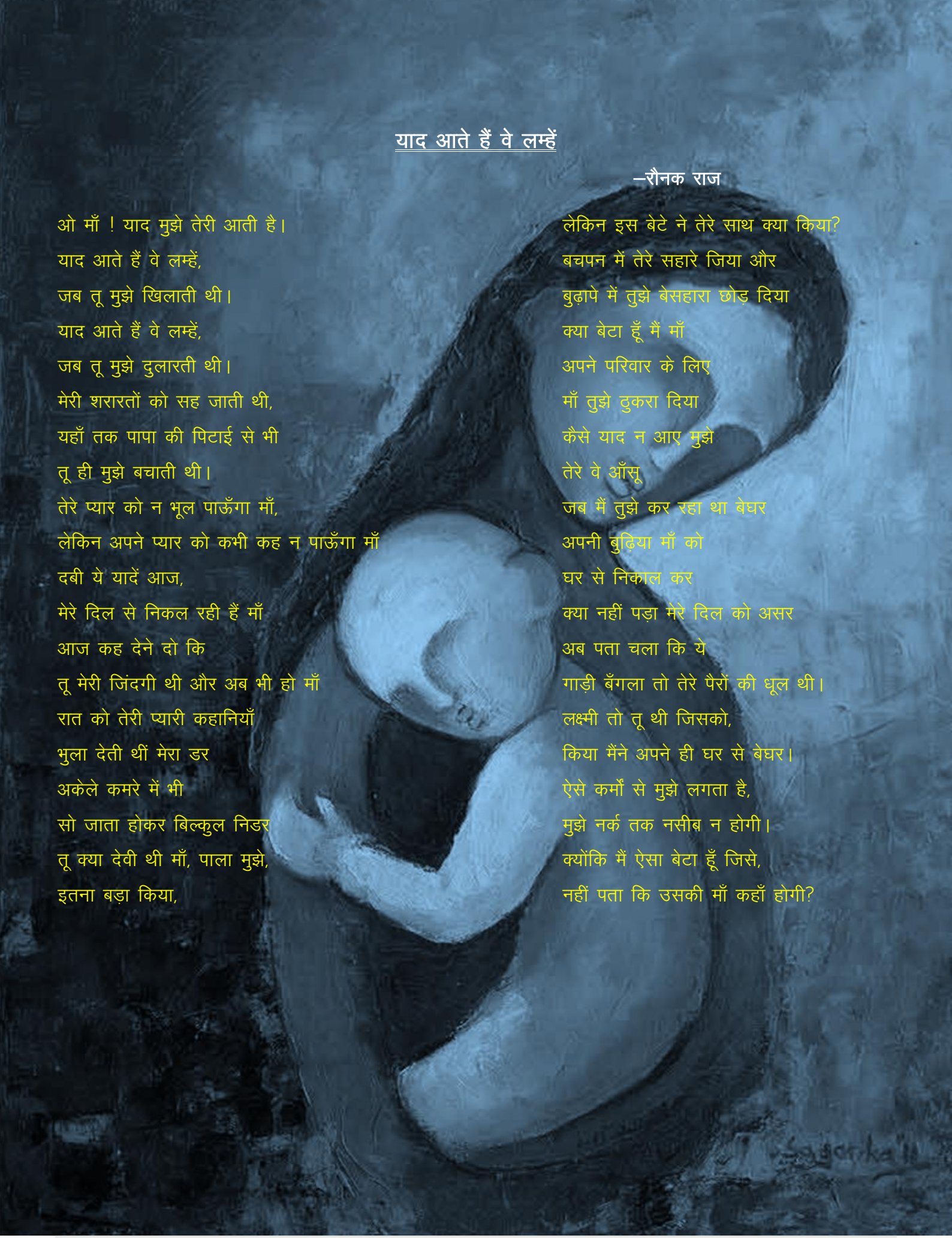

याद आते हैं वे लम्हें

–रौनक राज

ओ माँ ! याद मुझे तेरी आती है।
याद आते हैं वे लम्हें,
जब तू मुझे खिलाती थी।
याद आते हैं वे लम्हें,
जब तू मुझे दुलारती थी।
मेरी शरारतों को सह जाती थी,
यहाँ तक पापा की पिटाई से भी
तू ही मुझे बचाती थी।
तेरे प्यार को न भूल पाऊँगा माँ,
लेकिन अपने प्यार को कभी कह न पाऊँगा माँ
दबी ये यादें आज,
मेरे दिल से निकल रही हैं माँ
आज कह देने दो कि
तू मेरी जिंदगी थी और अब भी हो माँ
रात को तेरी प्यारी कहानियाँ
भुला देती थीं मेरा डर
अकेले कमरे में भी
सो जाता होकर बिल्कुल निडर
तू क्या देवी थी माँ, पाला मुझे,
इतना बड़ा किया,
लेकिन इस बेटे ने तेरे साथ क्या किया?
बचपन में तेरे सहारे जिया और
बुढ़ापे में तुझे बेसहारा छोड़ दिया
क्या बेटा हूँ मैं माँ
अपने परिवार के लिए
माँ तुझे ठुकरा दिया
कैसे याद न आए मुझे
तेरे वे आँसू
जब मैं तुझे कर रहा था बेघर
अपनी बुढ़िया माँ को
घर से निकाल कर
क्या नहीं पड़ा मेरे दिल को असर
अब पता चला कि ये
गाड़ी बँगला तो तेरे पैरों की धूल थी।
लक्ष्मी तो तू थी जिसको,
किया मैंने अपने ही घर से बेघर।
ऐसे कर्मों से मुझे लगता है,
मुझे नर्क तक नसीब न होगी।
क्योंकि मैं ऐसा बेटा हूँ जिसे,
नहीं पता कि उसकी माँ कहाँ होगी?

मेरी खुशी

– तिलोत्तमा कोचगवे (शिक्षिका)

आपकी खुशी का राज़ क्या है ?

आज फिर किसी ने पूछ लिया।

हर सुबह एक सवाल उठता,

कहीं से फिर जवाब आता।

दिनभर खुश रहना है या दुखी,

हमने चुनाव किया खुशी।

यह भी कोई लक्ष्य है ?

फिर एक और सवाल।

यह कोई लक्ष्य तो नहीं,

तो है क्या ? पता नहीं।

जब खुश रहते हैं तो,

थोड़ा समझदार होते हैं।

जब खुश रहते हैं तो,

दूसरों की गलती कम देखते हैं।

जब खुश रहते हैं तो,

अपने खिलाफ़ बेवकूफ़ी कम करते हैं।

बस इतना ही जाना है।

बस इतना ही जाना है।

प्रेम वर्षा

– रोली प्रियदर्शी

तेरे रूप सागर को समेटे
तन की गागर मेरी,
बिसर गई हूँ, क्या हूँ
कनुप्रिया या रोली।
घुमड़ रहा बादल मन
बह रही हवा मन्द,
झूमते डालों में
थिरक रहा अंग–अंग।
सावन की प्रथम फुहार में
नाच रहा मयूर मन,
खो गया उस चरम बिन्दु ये
जहाँ कनु और रोली।
बिसर गई हूँ, क्या हूँ
मैं कनुप्रिया या रोली।
हो गई मुझको तेरी
अदृश्य दिव्य काया
ऐसी शीतल सुगन्धित
पवन का झोंका आया
उदित देख कनु चन्द्रमुख
प्रेम चाँदनी जैसी,
बिसर गई हूँ क्या हूँ
मैं कनुप्रिया या रोली।
कोकिल मन तुझे पूकारे
प्रेम वर्षा, मुझे भींगा दें
एक पागल प्रेमी पतंग को
दीपक लौ, तू अपना ले
ये बादल कैसा छाया
तेरा प्रेम उमड़ कर आया
बूँद–बूँद में कनु तुम्हारी
शोभित अनुपम काया।
भींग रहा मेरा तन
तृप्त हुआ माटी मन
फैल गई मिलन की
दिव्य महक सौंधी
बिसर गई हूँ, क्या हूँ
मैं कनुप्रिया या रोली।

पहेलियों के उत्तर–

1. चुंबक
2. छाता
3. गन्ना
4. मच्छर
5. मच्छर

प्रश्नोत्तरी के उत्तर–

1. नई दिल्ली
2. रिश्वत देना
3. निरपेक्ष
4. इति
5. तुलसीदास
6. रैदास
7. प्रेमचंद
8. राजेंद्र बाला घोष
9. कफन
10. नवाब राय
11. इंदु
12. भीष्म साहनी
13. श्रीकांत वर्मा
14. मारे गए गुलफाम
15. हलकू

अगला अंक